Jankriti International Magazine

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 30-32, October-December 2017

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 30-32, अक्टूबर-दिसंबर 2017

आलेख

समाज के दो सजग प्रहरी : बसवेश्वर और कबीर

डॉ० धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक आचार्य, हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कासरगोड
मोबाइल नं0- 09453476741
ईमेल- dpsingh777@gmail.com

आज भूमण्डलीकरण के युग में विविधतापूर्ण समाज की एकता को बनाये रखना सबसे बड़ी चुनौती है। आज के तीव्र परिवर्तनशील समाज में मानवीय और सामाजिक चेतना को जगाये रखने के लिए वैचारिक परिवर्तन लाने के साथ ही उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम को सूत्र में पिरोकर रखने का कार्य बहुत पहले से हो रहा है। भारतीय भाषाएँ इस कार्य को करने में पूर्णतः सफल हैं। हिन्दी, तमिल, कन्नड़, तेलुगू, मलयालम आदि भारतीय भाषाओं में निर्मित साहित्य समग्र मानव जाति के लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। भारत में एक ऐसी समृद्ध संत परंपरा विद्यमान है जो भारत ही नहीं अपितु विश्वमानव को एकता के सूत्र में बाँधने में सक्षम है।

12वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के मध्य सम्पूर्ण भारत में नवीन चेतना प्रस्फुटित हुई या यूं कहा जा सकता है कि यह समय किसी न किसी रूप में देश के प्रत्येक भाग में प्रस्फुटित भक्ति आन्दोलन सामाजिक चेतना और समाज के नव निर्माण का युग था। इस दौरान भारत के विभिन्न प्रान्तों में अलग-अलग तरह से संतों की वाणी ने जनमानस में नई स्फूर्ति प्रस्फुटित की। पूरी की पूरी संत परंपरा और भारत के अलग-अलग भाषाओं में निर्मित संत साहित्य देश की ऐसी महान धरोहर है जो आज 21वीं शती के विषमता से व्यथित समाज को समरसता का अमृतपान कराने में सक्षम है। ये साहित्य कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे भारत को भौगोलिक, खान-पान, वेषभूषा, भाषा आदि में भारी अंतर होने के बावजूद एकता के सूत्र में बाँधने का काम कर रहा है। इसके लिए आज एक ऐसे सेतुपथ की आवश्यकता है जो विभिन्न भाषा-भाषियों में भावैक्य स्थापित कर सके। यही कारण है कि आज अनुवाद विज्ञान और तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता पहले से अधिक महसूस होने लगी है। कर्नाटक में एक लम्बी समृद्ध संत परंपरा विद्यमान है। इस पावन धरा को अलंकृत करने वालों में संत बसवेश्वर, अल्लम प्रभु, चेन्नबसवण्णा, अंबिगर चैडय्या, आय्दक्कि मारय्या, किन्नड़ी बोम्मया, मडिवाल माचय्या, वचन भण्डारी,